	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय **बाँदा - २१०००१ (उ०प्र०)** **Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)**

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.:155 /2026) Year: 8th

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 02.06.2026**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ अधिक तापमान के मद्दे नजर चौलाई, भिंडी, लोबिया, कुल्फा, बैगन, टमाटर, मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में आवश्यक मृदा नमी बनाए रखें। इसके लिए काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग कर सकते हैं। ➢ आवश्यक मृदा नमी के अभाव एवं अधिक तापमान के कारण मिर्च, बैगन, टमाटर तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों में पुष्प व फल-पतन हो सकता है। ➢ फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए समुचित जल निकासी वाले खेतों को चुने तथा खेत की गहरी जुताई कर दें जिससे कीट व्याधि व खर पतवार के बीज नष्ट हो जाएं। खेत में कंपोस्ट प्रयोग करके जुताई करें तथा मिट्टी में मिला दें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	शस्य.प्रबंधन ➢ गर्मी की जुताई पूर्ण कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि कीट के अंडे– बच्चे, रोगजनक एवं खरपतवार के बीज आदि नष्ट हो जायें। ➢ वर्षा से पूर्व खेत में अच्छी मेड़बन्दी कर दें, जिससे खेत की मिट्टी न बहे तथा खेत वर्षा का पानी सोख सके। ➢ उर्द, मूँग तथा चारे की फसलों में समय समय पर सिचाई करते रहें । ➢ जायद में बोई गई उर्द की कटाई मड़ाई का कार्य तथा मूँग की फलियों की तुड़ाई का कार्य जून माह के अंत तक अवश्य पूरा कर लें। ➢ चारे के लिए ज्वार, लोबिया व बहुकटाई वाली चरी की बोआई कर दें।वर्षा न होने की दशा में पलेवा देकर बोआई की जा सकती है। ➢ खरीफ फसलों की बोयाई के लिए अच्छे बीज, खाद आदि का प्रबंध समय पूर्व सुनिश्चित कर लें । ➢ खरीफ फसल में खरपतवार का प्रकोप भी ज्यादा होता है, इसके नियंत्रण हेतु कुछ शाकनाशी जैसे धान के लिए बिस्पायरिबैक सोडियम (नोमिनो गोल्ड), दलहन हेतु पेंदिमेथालिन, अरहर के लिए इमेजाथापीर नामक दवा आदि का प्रबंध ससमय सुनिश्चित कर लें ।

		मृदा.प्रबंधन ➢ जिन किसान भाईयों ने कम्पोस्ट बनाने हेतु गढ्ढा (पिट) अथवा नाडेप संरचना बना रखी है वर्षा से पूर्व भरना सुनिष्चित करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जिन किसान भाईयों ने गोबर की खाद को अभी तक खेतों में नही पहुचाया है वो किसान भाई अतिश्रीघ्र यह कार्य पूर्ण करलें। ➢ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलो हेतु फसलानुसार उर्वरको की व्यवस्था करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ इस महीने में तापमान की अधिकता एवं धूल भरी आँधी की प्रचुरता इस क्षेत्र में काफी आम है। जिस कारण मानव जीवन ही नहीं अपितु पशु पक्षीयों का जीवन भी प्रभावित हो रहा है। ➢ जानवरों में गर्मी से संबंधित रोग जैसे बुखार, निर्जलीकरण, शरीर के लवण में कमी, भूख में कमी और उत्पादकता में कमी इस दौरान जानवरों में देखे जा सकते हैं। ➢ जानवरों को तेज गर्मी व दोपहर की गर्म हवाओं(लू) इत्यादि से बचाया जाना चाहिए। ➢ पशुओं के चारे एवं भोजन में कमी न आये इस हेतु वर्तमान अवधि में चारा संग्रह, खरीद और भंडारण के लिए पर्याप्त प्रयास किए जाने चाहिए। ➢ पशुओं को शरीर के आवश्यक लवणों के क्षय से बचाने के लिए उपाय करने चाहिये। सुनिश्चित करें कि उचित मात्रा में नमक, चूना व खनिज मिश्रण भोजन के साथ दिया जाना चाहिये। ➢ दुधारू पशुओं को संतुलित आहार दें ताकि उनकी दूध उत्पादन क्षमता बढ़े। मौसम के आधार पर, पशु चारा की सामग्री को बदलना चाहिए। इस समय पशु भोजन में गेहूँ का दलिया या चोकर और ज्वार की मात्रा बढ़ाएँ। ➢ पशुओं को अन्तः परजीवीनाशक व वाहय परजीवीनाशक दवाइयॉ देनी चाहिये जिससे इन परजीवीयों का प्रसार न हो सके। ➢ मक्का, बारहमासी घास और अन्य चारा फसलों को चारे हेतु अभी काटा जाना चाहिए। ➢ इस महीने के दौरान भेड़ों से ऊन उतारने का कार्य भेड पालको को करना चाहिए।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ दीमक के जैविक नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया वैसियाना 1.15 प्रतिशत बायोपेस्टीसाइड की 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–70 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर प्रति हे0 की दर से भूमि शोधन करना चाहिये। ➢ भिण्डी/लोबिया/कद्दू वर्गीय सब्जियों आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें। थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर पानी मे घोलकर 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें।

		➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल मे 5 ग 5 ग 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को शोधित कर कर ट्रैप लगाना चाहिये। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ आम में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को शोधित कर ट्रैप लगाना चाहिये। 12–15 ट्रैप प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	जून माह के प्रथम पखवाड़े में तापमान अधिक तथा कहीं–कहीं प्री–मानसूनी वर्षा एवं आर्द्रता बढ़ने लगती है, जिससे मृदा एवं बीज जनित रोगों का खतरा बढ़ जाता है। खरीफ फसलों की बुवाई से पहले बीज एवं खेत की उचित तैयारी करना आवश्यक है, ताकि प्रारंभिक अवस्था में रोगों से बचाव किया जा सके. **धान की नर्सरी** :झुलसा एवं बीज गलन बीज अंकुरित न होना, पौधों का गलकर सूख जाना इसके प्रमुख लक्षण हैं। **नियंत्रण:** ➢ बीज उपचार हेतु कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/किग्रा बीज या ट्राइकोडर्मा 10 ग्राम/किग्रा बीज का प्रयोग करें। ➢ नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें। **उड़द एवं मूंग** पीला मोजेक रोगए, पत्तियों पर पीले एवं हरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं तथा पौधों की वृद्धि रुक जाती है। **नियंत्रण:** ➢ रोगग्रस्त पौधों को निकालकर नष्ट करें। ➢ सफेद मक्खी नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मिली/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। **जड़ गलन** .पौधे पीले पड़कर सूखने लगते हैं तथा जड़ें काली हो जाती हैं। **नियंत्रण:** ➢ बीजोपचार ट्राइकोडर्मा 5दृ10 ग्राम/किग्रा बीज से करें। ➢ खेत में जलभराव न होने दें। **बाजरा एवं ज्वार** .स्मट एवं डाउनी मिल्ड्यू:,पत्तियों पर पीली धारियाँ तथा बालियों में काले चूर्ण जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। नियंत्रण: ➢ मेटालेक्सिल 35–6 ग्राम/किग्रा बीज से बीजोपचार करें। ➢ रोगग्रस्त पौधों को खेत से निकालें।

		तिल .तना एवं जड़ गलन, पौधों का तना काला पड़ना एवं पौधों का सूखना प्रमुख लक्षण हैं। **नियंत्रणः** ➢ कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/किग्रा बीज से उपचार करें। ➢ जल निकासी की व्यवस्था रखें। ➢ सब्जियाँ (टमाटर, मिर्च, बैंगन) ➢ डैम्पिंग ऑफः ➢ छोटे पौधे जमीन की सतह से गलकर गिर जाते हैं। **नियंत्रणः** ➢ नर्सरी मिट्टी में ट्राइकोडर्मा 2.5 किग्रा/हेक्टेयर गोबर खाद में मिलाकर प्रयोग करें। ➢ कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। **सामान्य सुझाव** ➢ खरीफ फसलों की बुवाई से पहले बीजोपचार अवश्य करें। ➢ खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें। ➢ रोगग्रस्त पौधों एवं अवशेषों को नष्ट करें। ➢ संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें। ➢ प्रमाणित एवं रोगमुक्त बीज का ही उपयोग करें।
6.	**बागवानी.** **प्रबंधन**	जून माह में अधिक गर्मी एवं शुष्क होने के कारण काफी सावधानियां अपनानी चाहिए। इस माह में फलों का अधिक गिरना, छालजलन, पत्तियों का झुलसा तथा सिंचाई की भी अधिक आवश्यकता होती है। खरपतवार को भी निराई – गुड़ाई द्वारा या खरपतवारनाशी दवाओं द्वारा नियंत्रण में रखना चाहिये। नये बाग लगाने की योजना तथा रेखांकन कार्य भी इसी माह में करने की आवश्यकता है ऐसी परिस्थितियों में बताये जा रहे सुझावों के अनुरूप ही कार्य करें। नये बाग के रोपण हेतु प्रति गड्ढा 30–40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद, एक किग्रा नीम की खली तथा आधी गड्ढे से निकली मिट्टी मिलाकर भरें। गड्ढे को जमीन से 15–20 सेमी. ऊँचाई तक भरना चाहिए। केला की रोपाई के लिए उपयुक्त समय है। रोपण हेतु तीन माह पुरानी, तलवारनुमा, स्वस्थ व रोगमुक्त पुत्ती का ही प्रयोग करें। पुत्तीयों के ऊपरी तानें की कंद से 25 से 30 सेंटीमीटर पर काट दें। रोपाई से पूर्व सभी पुत्तीयों को 1 ग्राम बविस्टीन प्रति लीटर पानी के घोल में उपचारित कर ले। रोपाई के समय केवल कंद भाग को ही मिट्टी में दबाए तथा रोपाई के बाद सिंचाई कर दें। पपीते में सितंबर–अक्टूबर में लगाए गए पौधों में अतिरिक्त नर पौधों को निकाल दे। पुराने बागों में इंटरक्रॉपिंग के रूप में हल्दी व अदरक बोआई करें। बेर में कटाई–छटाई का कार्य कर ले। आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें। **तेज गर्मी से बचाव :–**

		तेज गर्मी से बचने के लिए पौधों के मुख्य तने पर चूने तथा नीले थोथे का लेप करें। घोल बनाने के लिए कापर सल्फेट 2.5 किलोग्राम, बुझा हुआ चूना 5 किलोग्राम, सरेश 1/2 किलोग्राम तथा पानी 30 लीटर प्रयोग करें। यदि बाग में जंतर या ढैंचा है तो पानी देकर इसकी बढ़वार बढ़ा दें। **सिंचाई व्यवस्था :–** सिंचाई पंद्रह दिन के अन्तराल पर अवश्य दें। यदि बूंद–बंदू सिंचाई द्वारा बाग चलाया जा रहा है तो उसकी उम्र के हिसाब में निम्नलिखित मात्रा में पानी दे। बाग में पानी हमेशा शाम होने के बाद लगायें तथा गलत दिशा में बह रहे पानी से होने वाले नुकसान का पूरा ध्यान रखें। **मलचिंग द्वारा भूमि जल संरक्षण :–** भूमि को पॉलीथिन शीट द्वारा, पराली द्वारा, चने के नीरे द्वारा या भुई द्वारा ढकने से भूमि जल को वाष्पीकृत होने से बचाया जा सकता है। **बाग में हल जोतना :–** जून माह में बाग की भूमि को जोतना अतिआवश्यक है ताकि खरपतवारों का पूरी तरह से नष्ट किया जा सके तथा भूमि की ऊपरी परत ढीली करने पर यह मल्च का काम करें। ऐसा करने पर कीट व्याधि पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है। नींबू प्रजाति के बागो में खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी दवाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है। **नर्सरी (पौधशाला) के कार्य :–** ➢ सिंगल स्टेम ट्रेनिंग :– नींबू प्रजाति में खट्टी को सधाई देने के लिए सभी फुटान को हटा दें। (षीर्ष फुटान को छोड़कर) ताकि बरसात के मौसम में इस पर बडिंग या ग्राफिटिंग की जा सकें। ➢ बारामासी नींबू की 2.5 सेमी हार्डवुड टहनियों को पांच से आठ इन्च लम्बी काटकर इस माह के अंत में लगा दें। ➢ फालसे का बीज भी इस माह के दूसरे पखवाड़े में क्यारियों में बीज दें। ➢ पौधशाला में हर दूसरी सिंचाई के उपरान्त निराई–गुड़ाई अवश्य करें। ➢ आम और अमरूद के पौधों में बरसात में इनार्चिंग कराने के लिए बीजू पोधों को गमले में लगा देवें ताकि एक से डेढ महीने बाद इन पौधों पर पैबन्दी (प्रवर्धन) किया जा सके। फल पौधों पर 0.6 प्रतिषत बोरक्स का छिड़काव करें। ➢ बेर में 15 जून तक पौधों की वार्षिक कॉंट–छॉंट करावें। गमले की सफाई कराकर गोबर की खाद एवं उर्वरक देकर सिंचाई करें प्रति पेड़ लगभग 60–80 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद डाले। सुपर 100 ग्राम से 500 ग्राम (पौधे की आयु) के हिसाब से दे। ➢ नीम्बूवर्गीय फलः फलदार पदों में नाईट्रोजन व पोटाश की दूसरी मात्र का प्रयोग करें.। ➢ अंगूर की फसल में पक्के हुए गुच्छों को तुड़ाई कराकर प्रत्येक गुच्छे में से सडे फल तथा कच्चे फल की कॉंट छांट–कर बाजार में बेचें। नई बेल में 80–90 ग्राम यूरिया प्रति बेल हर दूसरी सिंचाई पर देते रहे व फालतू बढ़वार रोकते रहे। ➢ अमरूद के नये पौधें को गर्मी व लू से बचाये और सिंचाई अवष्य करें।

		➢ आडू के नये पौधे के तने के साथ मिट्टी अवष्य चढ़ायें। ➢ बागो में सिंचाई नियमित रूप से करते रहे। छोटे पौधों को गर्मी व लू से बचायें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	**वानिकी पौधशाला में सिंचाई प्रबंधन** ➢ पौधशाला में पौधों को सुबह जल्दी (सुबह 9 बजे से पहले) या शाम के समय (शाम 4 बजे के बाद) सिंचाई करें ताकि वाष्पीकरण से होने वाली नमी की हानि कम हो सके। ➢ दोपहर के तेज धूप के समय ऊपर से सिंचाई (ओवरहेड इरिगेशन) से बचें, इससे पत्तियाँ झुलस सकती हैं और फफूंद रोग लग सकते हैं। ➢ नर्सरी बेड के चारों ओर मल्चिंग (सूखे पत्त / घास–पुआल) का उपयोग करें ताकि मिट्टी की नमी बनी रहे और जड़ क्षेत्र का तापमान नियंत्रित रहे। ➢ अत्यधिक गर्मी के दौरान नए रोपे गए या अंकुरित पौधों के लिए अस्थायी शेड नेट (50.75ः छाया) लगाएं। **नर्सरी तैयारी हेतु फल संग्रह (कृषि–वानिकी प्रजातियाँ)** ➢ वन क्षेत्रों से पके फलों को संग्रह करने का यह सही समय है, जिनसे नर्सरी तैयार की जा सकती है। ➢ चिरौंजी (बुकानानिया लांजान) ➢ तेंदू (डायोस्पाइरस मेलानोक्सिलॉन) ➢ सहली (गोंद)दृएनोजीसस लैटिफोलियाध्स्टरकुलिया यूरेन्स (गोंद उत्पादक प्रजातियाँ) ➢ केवल पूरी तरह से पके, स्वस्थ एवं रोग–रहित फलों का ही संग्रह करें। ➢ संग्रह के बाद बीज निकालें, साफ करें और ठंडी, सूखी एवं हवादार जगह पर स्टोर करें। ➢ बुवाई से पहले बीजों को फफूंदनाशक (जैसे कार्बेन्डाजिम / 2 ग्राम प्रति लीटर पानी) से उपचारित करें, ताकि अंकुरण से पहले और बाद में सड़न से बचाव हो सके। **तेज हवा से हुए पेड़ों / तनों के नुकसान का प्रबंधन** ➢ हाल की तेज हवाओं से पेड़ों हुई क्षतिरू ➢ टूटी / मुड़ी हुई शाखाओं को तेज आरी या सेकेटर से सावधानीपूर्वक हटाएँ व मुख्य तने के पास साफ, ढलानदार कट लगाएँ, ध्यान रखें कि छाल के कॉलर को नुकसान न पहुँचे। ➢ शाखा टूटने से बड़े घाव होने पररू घाव की सतह को फफूंदनाशक घोल (जैसे कॉपर ऑक्सीक्लोराइड / 3 ग्राम प्रति लीटर पानी) से साफ करें। ➢ घाव पर ब्लीटॉक्स (कॉपर ऑक्सीक्लोराइड) पेस्ट लगाएँ दृ इसके लिए ब्लीटॉक्स 50˘च. पानी. थोड़ी सा टैल्कम पाउडर मिलाकर चिकना पेस्ट बनाएँ। ➢ नर्सरी एवं रोपण स्थल से गिरे हुए मलबे (टूटी शाखाएँ, पत्तियाँ) को हटा दें, इससे आग का खतरा तथा कीटों का आश्रय कम होगा। **गर्म एवं शुष्क मौसम के लिए सामान्य निवारक उपाय**

		➢ तीव्र गर्मी के दौरान किसी भी प्रकार की रोपाई या छंटाई (प्रूनिंग) से बचें। ➢ अत्यधिक संवेदनशील प्रजातियों (जैसे चिरौंजी के पौधे) के लिए दिन में दो बार हल्की सिंचाई करें। ➢ वन नर्सरी के चारों ओर अग्नि रेखा (फायर लाइन) बनाए रखें, ताकि आसपास की सूखी घास / वन तल से आग लगने की दुर्घटना से बचा जा सके।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल-

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय डॉ मयंक दुबे	6. डॉ दिनेश गुप्ता 7. डॉ पंकज कुमार ओझा 8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 9. डॉ जगन्नाथ पाठक 10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार